

डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 16, एकता के लिए आह्वान, फिलिप्पियों 4

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में बोल रहे हैं। यह सत्र 16 है, एकता के लिए आह्वान, फिलिप्पियों 4।

जेल पत्रों पर हमारी बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

हम फिलिप्पियों के बारे में हाल ही में आपके द्वारा पढ़े गए पाठों में पढ़ रहे हैं। मुझे आज यह कहना चाहिए कि फिलिप्पियों को समाप्त करते समय, हमें पॉल द्वारा एक चर्च को लिखे गए इस पत्र की समृद्धि की याद आती है जो एक पूर्व रोमन उपनिवेश में स्थित है। मैंने अब तक आपको पृष्ठभूमि के बारे में बहुत कुछ बताया है, लेकिन अगर पॉल आज जीवित होते तो शायद उन्हें इस बात की खुशी होती कि मैं आपको उनके निष्कर्ष प्रस्तुत करने से पहले इस पत्र में कही गई कुछ बातों को याद दिलाने में मदद कर सकूँ।

क्यों? क्योंकि यह पत्र शुरू से अंत तक एक बार में पढ़ने के लिए लिखा गया था, और अब तक, मैंने कई घंटे बिताकर यह समझने की कोशिश की है कि वह क्या पढ़ना चाहता था, शायद 15 से 20 मिनट या उससे भी ज्यादा। तो, आइए इस पत्र की शुरुआत में कुछ मुख्य तत्वों पर नज़र डालें। शुरुआती व्याख्यानों में, मैंने आपको याद दिलाया था कि पॉल जेल से लिख रहा था, शायद रोमन कारावास से।

वह जेल में था क्योंकि वह सुसमाचार को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा था और अपने मिशनरी कार्य के परिणामस्वरूप एक गंभीर समस्या में फंस गया था। दूसरे शब्दों में, जिन लोगों ने उसे कैद किया था, उनका उद्देश्य उस मिशन को कम करना या रोकना था जिसके बारे में उसका मानना था कि परमेश्वर ने उसे पूरा करने के लिए बुलाया था, अर्थात् यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करना। पौलुस ने अध्याय एक में बहुत खुशी और उत्साह के साथ उल्लेख किया है, भले ही वह जेल से था, कि कारावास ने सुसमाचार के प्रचार को नहीं रोका है।

और जैसे कि फिलिप्पी में चर्च उसके अनुभव से निराश हो सकता है, वह इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि उसका कारावास वास्तव में सुसमाचार के मार्ग को आगे बढ़ा रहा है, और वास्तव में, शाही रक्षक जो वास्तव में उसकी रखवाली कर रहे थे, सुसमाचार द्वारा उन तक पहुँच रहे हैं, और उसके आस-पास के कई लोग अब जानते हैं कि वह जेल में क्यों है। दूसरे शब्दों में, अगर उन्हें लगता है कि वे उसे सलाखों के पीछे या बंद दरवाजों के पीछे रखने जा रहे हैं ताकि सुसमाचार आगे न बढ़े, तो कारावास इसे रोक नहीं पाएगा। और उससे भी बढ़कर, कारावास ने सुसमाचार के प्रचार के लिए एक अवसर पैदा किया था।

इसी बात पर उन्होंने फिलिप्पी के चर्च को प्रोत्साहित किया कि वे मसीह द्वारा उन्हें जो करने के लिए बुलाया गया है, उस पर अपना ध्यान केंद्रित रखें। उन्होंने उन्हें एक ऐसी मानसिकता

विकसित करने की चुनौती दी जो उन लोगों के योग्य हो जो यीशु मसीह को जानते हैं। यह दृष्टिकोण और मानसिकता के संदर्भ में है कि वह चर्च में एकता का आह्वान करता है और चर्च से ऐसी मानसिकता विकसित करने के लिए कहता है जो मसीह यीशु में परिलक्षित या उदाहरणित होती है।

पॉल हमें वह सुंदर अंश देता है जिसे हम मसीह का भजन कहते हैं और दिखाता है कि कैसे, आज्ञाकारिता और विनम्रता में, मसीह अपना कार्य पूरा करता है। ऐसा करते हुए, पॉल चर्च को कार्य करने के लिए बुलाता है। वह उनसे एकजुट रहने के लिए हर संभव प्रयास करने और ऐसे लोगों के उदाहरण देने के लिए कहता है जिन्होंने इस आज्ञाकारिता और विनम्रता को बनाए रखा है और उस मानसिकता और शायद दृढ़ता को विकसित किया है, और मुझे कहना चाहिए, कि वे ईश्वर के आह्वान का पालन करने में सक्षम हैं।

उन्होंने अपने करीबी सहयोगी का ज़िक्र किया, जिसे उन्होंने अपना बेटा टिमोथी कहा। उन्होंने इपफ्रदीतुस का ज़िक्र किया। वह वास्तव में संभावित यहूदीवादियों के बारे में कड़ी चेतावनी जारी करते हैं जो आकर हंगामा मचाएँगे।

और फिर उस कहावत के आधार पर, आप जानते हैं, ये यहूदी लोग, अगर वे आते हैं, तो आमतौर पर वे शरीर की चीज़ों के बारे में शेखी बघारने आते हैं। और अगर कोई ऐसा कर सकता है, तो उससे ज़्यादा और कौन कर सकता है? उसके पास शेखी बघारने के सभी अधिकार और विशेषाधिकार थे। उसने ऐसा नहीं करने का चुनाव किया।

पॉल चर्च को एकता और ध्यान की इस भावना के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। पिछले व्याख्यान में, मैंने उल्लेख किया था कि आप अध्याय 4, पद 1 पढ़ सकते हैं, जिसमें पॉल ने चर्च को अध्याय 3 के भाग के रूप में दृढ़ रहने के लिए कहा था या अध्याय 3 के अंत के साथ आगे बढ़ने के लिए कहा था। यदि आप इसे इस तरह से पढ़ते हैं, तो यह उसी तरह समाप्त होगा जिस तरह से हमने अपना पिछला व्याख्यान समाप्त किया था। लेकिन अगर आप इसे एक नए अध्याय की शुरुआत के रूप में देखते हैं, तो यह इस तरह से पढ़ेगा।

आप पहले अध्याय, अध्याय 4 और पहली आयत को देखेंगे, जिसमें वास्तव में कहा गया है कि अतीत में जो कुछ हुआ है, उसके कारण मैं आपसे इसका अनुसरण करने का आग्रह कर रहा हूँ। और मैं उस कथन को दृढ़ रहने के जोरदार कथन या नसीहत के साथ समाप्त करने जा रहा हूँ। और यदि आप ऐसा करते हैं, तो मेरा आनंद पूरी तरह से पूर्ण हो जाएगा।

परिणामस्वरूप, अब वह यह जानकर निष्कर्ष निकाल सकता था कि यदि वे दृढ़ रहें, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। पद 1 से अध्याय 4 के अंत तक आगे पढ़ते हुए, हम आगे कह सकते हैं, हाँ, यदि वे दृढ़ता से डटे रहें जैसा कि पॉल ने उन्हें सलाह दी है, तो वे इस एकता भ्रम की किसी भी भावना से छुटकारा पा लेंगे और मसीह के मार्ग का अनुसरण करेंगे जैसा कि उसने पिछले अध्यायों में आगे बढ़ाया था। इसलिए, जब वह कहता है, मेरे भाइयों, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ और जिनकी मैं लालसा करता हूँ, मेरा आनंद और मेरा मुकुट, मेरे प्रिय, प्रभु में इस प्रकार दृढ़ रहो, पॉल शायद

एक ऐसा बयान जारी कर रहा है जो अतीत को जोड़ रहा है, और हमें आने वाले समय में ले जा रहा है।

मुख्य चेतावनी के अनुसार, दृढ़ रहो। दृढ़ रहो। झूठे शिक्षकों के संभावित खतरे के सामने या उसके साथ, दृढ़ रहो।

फिलिप्पी के रोमन उपनिवेश के अनमोल लोगों के साथ, दृढ़ रहें। जहाँ तक चर्च में एकता और मानसिकता, आज्ञाकारिता और विनम्रता विकसित करने की बात है, जो इस कसरत को करने के लिए आवश्यक है, दृढ़ रहें। तब अगर आप उस आयत को इस तरह से पढ़ेंगे, तो आप देखेंगे कि पॉल यहाँ से एक सामान्य चेतावनी के रूप में क्या देने जा रहा है, ताकि चर्च को कुछ विशिष्ट मुद्दों से छुटकारा पाने और अपनी व्यक्तिगत चुनौतियों को सकारात्मक तरीके से संबोधित करने या उनका पीछा करने की चुनौती दी जा सके।

पॉल, अगर आपको याद हो, तो मैंने आपको पिछले व्याख्यान में दिखाया था कि कैसे, इस सामान्य चेतावनी में, वह रिश्ते, कृतज्ञता की भावना और इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि चर्च को उसका आनंद और मुकुट कहा जा सकता है, और यह सब प्रभु में है। अब तक, आप बार-बार यह सुनकर थक गए होंगे कि मैं पॉल को मसीह में, मसीह यीशु, मसीह के लिए, सच्चे मसीह के बारे में बात करते हुए कितना संदर्भित करता हूँ। उनकी पसंदीदा अभिव्यक्तियों में से एक यह भी है कि प्रभु में, उस स्थान या क्षेत्र में जहाँ मसीह प्रभु है, मसीह के प्रभुत्व वाले क्षेत्र में, जहाँ वह अपनी पूरी शक्ति के साथ शासन करता है, और जहाँ अपने शासन में वह चर्च को दृढ़ रहने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करता है।

खैर, यह इस बात पर है कि वह एकता के लिए एक विशेष अपील करेगा क्योंकि उसने पहले ही चर्च की एकजुटता की आवश्यकता का उल्लेख किया था। और मैं पद दो और तीन से पढ़ता हूँ; मैं वहाँ तुमसे विनती करता हूँ, मैं सुंतुखे से विनती करता हूँ कि वह प्रभु में एकमत हो। हाँ, मैं तुमसे भी विनती करता हूँ, सच्चे साथी, इस महिला की मदद करो जिसने सुसमाचार में मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है, साथ ही क्लेमेंट और मेरे बाकी साथी कार्यकर्ताओं के साथ, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में हैं।

जाहिर है, चर्च में दो महिलाएँ हैं जिनके बीच अच्छे संबंध नहीं हैं। आश्चर्य, आश्चर्य, आश्चर्य। यदि आप किसी तरह के चर्च नेतृत्व में शामिल रहे हैं, तो आप कहेंगे, यही बात फिलिप्पियों को इतना वास्तविक बनाती है।

खैर, पुरुष नेताओं को लड़ना और चुगली करना पसंद है। आप चर्च काउंसिल की बैठकों में जाते हैं और आपको लगता है कि एक निर्णय नहीं लिया जा सकता है। महिला नेता वास्तव में बैठक में शांत और शांत दिख सकती हैं।

वे सभा का नेतृत्व करते हैं, और कभी-कभी, वे एक-दूसरे की पीठ पीछे तरह-तरह की गंदी बातें कहते हैं। इसे चर्च और चर्च नेतृत्व कहा जाता है। जाहिर है, फिलिप्पी में यह सच था।

और दो खास महिलाएँ जिनका ज़िक्र करना ज़रूरी है, जूडिया और सुंटुखे, उनके बीच अच्छे संबंध नहीं थे। इतना कहना ही काफी है कि वे आपस में झगड़ रही थीं। वे एक-दूसरे से खुश नहीं थीं और इसका असर चर्च पर पड़ रहा था।

इसलिए, पौलुस कलीसिया में एकता की अपील करता है। वह यहूदिया और सुन्तुखे से जिम्मेदारी से काम करने की अपील करता है। इन महिलाओं को क्यों चुना गया है? हम कुछ ही देर में इस पर नज़र डालेंगे।

लेकिन यह काफी संभावना है कि अगर वे जिम्मेदारी से काम नहीं करते हैं, तो इसके परिणाम बहुत बड़े होंगे और वास्तव में पूरे चर्च को प्रभावित कर सकते हैं। पॉल सचमुच उनसे एक उचित मानसिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विनती करेगा, एक मानसिकता जो मसीह में रहने वालों के लिए उपयुक्त है। मैंने आपको पहले बताया था कि पॉल के लिए फ़ोनेसिस, या मानसिक दृष्टिकोण, आचरण के लिए कितना महत्वपूर्ण है और लोग खुद को कैसे संचालित करते हैं।

जिस तरह से वे सोचते हैं, उसी तरह से वे लोगों के साथ व्यवहार करते हैं। पॉल उनसे न केवल जिम्मेदारी से काम करने की अपील करने में सबसे आगे है, बल्कि विशेष रूप से एक उचित मानसिकता विकसित करने के लिए भी। क्यों? आम तौर पर, जब लोग चर्च में लड़ते हैं, तो यह किसी व्यक्तिगत एजेंडे से जुड़ा होता है।

यह स्वयं या शरीर या व्यक्तिगत हित से जुड़ी हुई चीज़ है। आपको याद होगा कि फिलिप्पियों पर इस व्याख्यान श्रृंखला में पहले भी मैंने आपको बताया था कि कैसे पॉल ने चर्च को स्वर्गीय मानसिकता विकसित करने की चुनौती दी थी ताकि वे यहाँ और अभी अपने जीवन के तरीके को आकार दे सकें। अगर ये महिलाएँ वास्तव में किसी आत्म-महत्वाकांक्षा या आत्म-एजेंडे में फंस गई हैं या फंस गई हैं जो स्थानीय मण्डलियों के लिए कुछ समस्याएँ पैदा कर रही हैं, तो पॉल ने कहा, मैं आपसे स्पष्टता और दृढ़ता के साथ सही मानसिकता विकसित करने का अनुरोध करता हूँ।

और उन्हें ऐसा करना चाहिए, सिर्फ़ ऐसा करने के लिए नहीं। उन्हें प्रभु में ऐसा करना चाहिए। उन्हें ऐसा उस क्षेत्र में करना चाहिए जहाँ यीशु प्रभु हैं, उस क्षेत्र में जहाँ वे दोनों मसीह के प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं और खुद को मसीह के प्रभुत्व के अधीन करते हैं।

दूसरे शब्दों में, मसीह की आज्ञाकारिता में, उन्हें अपनी सारी इच्छाएँ, अपनी इच्छाएँ, अपनी महत्वाकांक्षाएँ समर्पित कर देनी चाहिए और उन लोगों के योग्य मानसिक दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए जो प्रभु के नाम का आह्वान करते हैं। प्रभु में सही मानसिकता विकसित करें। वाह।

और जैसे कि ये महिलाएँ खुद की मदद करने में सक्षम नहीं हैं, पॉल एक साथी से इन महिलाओं की मदद करने की अपील करता है। यह बहुत दिलचस्प है। वह चाहता है कि उसका साथी इन दो महिलाओं की मदद करे।

मैं उनमें से कुछ का खुलासा करूँगा। लेकिन बस एक मिनट के लिए, आइए देखें कि ये महिलाएँ कौन थीं: यहूदिया और सुन्तुखे। हमें इन दो महिलाओं के बारे में नए नियम या बाइबल में कहीं और कोई और जानकारी नहीं मिलती।

इसलिए, यह एकमात्र जगह है जहाँ हम वास्तव में उनके बारे में कुछ जान पाते हैं। जो स्पष्ट प्रतीत होता है वह यह है कि उन्हें इस चर्चा में अलग से रखा गया है और कुछ हद तक प्रमुखता दी गई है, यह दर्शाता है कि अगर वे चीजों को सुलझा नहीं पाते हैं तो उनके पास चर्च को बनाने या नुकसान पहुँचाने का संभावित प्रभाव है। चर्चों में संघर्ष और मुद्दों से निपटने का प्राकृतिक तरीका हमें बताएगा कि आम तौर पर इस तरह के विवाद केवल व्यक्तिगत नहीं होते हैं, बल्कि आम तौर पर वे गुटों में आते हैं जहाँ मजबूत व्यक्तित्वों के अनुयायी होते हैं, और इसलिए वे अधिक समस्याओं को जन्म देने के लिए एक-दूसरे को बढ़ावा देने और बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

इसलिए, सभी संकेतों के साथ, हम यह अनुमान लगाने में सक्षम हो सकते हैं कि ये प्रमुख महिलाएँ हैं जो वास्तव में चर्च में कुछ विवादास्पद मुद्दों की चैंपियन हैं। कुछ विद्वानों ने उनमें से एक की पहचान लिडिया के साथ की है। फिलिप्पियों के परिचय में, मैंने आपको याद दिलाया कि जब पॉल फिलिप्पी में सेवा करने गया था, तो प्रभु के पास आने वाले प्रमुख व्यक्तियों में से एक लिडिया थी।

और मैंने आपका ध्यान प्रेरितों के काम में लूका के वर्णन से भी आकर्षित किया कि जब पॉल शहर में आया तो बहुत सी महिलाएँ उसकी बात सुनने के लिए तैयार थीं। और इसलिए कुछ लोग कहते हैं कि शायद इन महिलाओं में से एक वास्तव में लिडिया है। ट्यूबिंगन स्कूल, जो किसी समय अपने अत्यधिक उदार और अत्यधिक सट्टा निष्कर्षों के कारण अधिकांश आधारों पर बदनाम हो गया है, ने भी सुझाव दिया है कि वास्तव में ये यहूदी ईसाइयों और गैर-यहूदी ईसाइयों के रूपक चित्रण हैं।

तो, अगर यहूदिया यहूदी ईसाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक विशेष प्रतीक है, तो सिन्थिके गैर-यहूदी ईसाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक प्रकार का प्रतीक होगा। वास्तव में उस निष्कर्ष पर पहुंचना एक बहुत बड़ा कदम है। तो, ये दो महिलाएँ कौन हैं? उत्तर।

हम नहीं जानते। ओह, मेरे छात्र इससे नफरत करते हैं। आप पीएचडी कैसे कर सकते हैं और कह सकते हैं कि आपको नहीं पता? ओह, हाँ, हमें नहीं पता।

फिलिप्पियों की पुस्तक में इन महिलाओं के बारे में जो बताया गया है, उसके अलावा हमारे पास कोई और सबूत नहीं है। हम अनुमान लगा सकते हैं कि वे नेता हैं। हम अनुमान लगा सकते हैं कि चर्च में उनका एक प्रमुख स्थान था।

हम उनकी भूमिका के बारे में बहुत सी बातें अनुमान लगा सकते हैं। और स्पष्ट रूप से, वे प्रमुख व्यक्ति थे। यह सब अनुमान है।

और यह उतना ही करीब है जितना हम हो सकते हैं। हालाँकि, पॉल का कहना है कि अगर वे चर्च में दृढ़ रहना चाहते हैं, और वे प्रभु में दृढ़ रहेंगे, तो इन महिलाओं को प्रभु में सही मानसिकता

विकसित करनी होगी। और अगर वे प्रभु में सही मानसिकता विकसित करेंगे, तो वे उस एकता को पूरा करने में मदद करेंगे जो वह चाहते हैं और चर्च में देखना चाहते हैं।

लेकिन आप पूछ सकते हैं कि आपका साथी कौन है? पॉल एक जूए-साथी के बारे में बात करता है जिसे इस महिला की मदद करनी चाहिए। जूए-साथी कौन है? खैर, ऐसा लगता है कि जूए-साथी वह व्यक्ति है जो पॉल और फिलिप्पी की कलीसिया को परस्पर परिचित है। ऐसा लगता है कि इस विशेष जूए-साथी को नाम के संदर्भ में उल्लेख की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि लोग उसे जानते हैं।

शायद कभी-कभी उसे, कुछ लोग उसे, ओह, जूनियर पॉल, पॉल के दोस्त के रूप में संदर्भित करते हैं। तो शायद यह उपनाम भी है कि यह आदमी कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे लोग जानते हैं कि आप उसे देखते हैं, आप पॉल को देखते हैं। वह कौन है? हम पहली जगह में कह सकते हैं कि वह व्यक्ति एक जाना-माना व्यक्ति था।

और उस व्यक्ति का मण्डली में इतना सम्मान था कि उसे इस महिला की मदद करने के लिए कहा गया जो समस्याओं से जूझ रही थी। यह इपफ्रदीतुस हो सकता है, यह लूका हो सकता है, यह कोई भी हो सकता है, लेकिन हम इस व्यक्ति का नाम नहीं जानते। लेकिन हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि वास्तव में कोई है, कि यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे सभी पक्ष जानते हैं।

कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि यह जूआधारी व्यक्ति निश्चित रूप से तीमुथियुस होना चाहिए। पौलुस उसके बारे में बहुत कुछ कहता है। वैसे, यह एक संभावना है, लेकिन यह सिर्फ एक अनुमान है।

कुछ लोग कहते हैं कि यह इपफ्रदीतुस है, और कुछ कहते हैं कि यह सीलास है। सीलास उस समय पौलुस के साथ जेल में था जब वे फिलिप्पी में मुसीबत में फंस गए थे। इसलिए, यह सीलास हो सकता है।

कुछ लोग कहते हैं, ओह, यह लूका हो सकता है, वह चिकित्सक जिसका नाम उसने कुलुस्सियों को लिखते समय लिया था। खैर, यह संभव है, लेकिन जब हम इस बारे में सोचते हैं तो हम अभी भी अनुमान के दायरे में हैं। शुरुआती चर्च के पिताओं में से एक, अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट, वास्तव में कहते हैं कि उन्हें लगता है कि हमें इस जुए वाले व्यक्ति के बारे में पॉल की पत्नी के संदर्भ में सोचना चाहिए।

और यह योक साथी जो पॉल की पत्नी है, संभवतः लिडिया है। यह बहुत दिलचस्प है। यह आपको हैरान कर देगा क्योंकि हम इस बारे में सोच रहे थे, और हम अध्ययन करने और यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि पॉल शादीशुदा था या नहीं, और सभी संकेतों से पता चलता है कि पॉल शादीशुदा नहीं था।

क्लेमेंट ने कहा, यह योक फ़ेलो, मेरा मतलब है, योक फ़ेलो, मेरा मतलब है, कोई ऐसा व्यक्ति जो एक दूसरे से इतना जुड़ा हुआ है, लगभग एक आत्मा, एक शरीर, वह पॉल की पत्नी है। और उसे लगता है कि हमें लिडिया के बारे में सोचना चाहिए। ओह, पॉल चतुर है, फिर।

वह हमसे यह बात छिपा रहा है। नहीं, मैं आपको अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट के बारे में कुछ सावधान करना चाहता हूँ। प्रारंभिक बाइबिल व्याख्या में, हमारे पास दो प्रमुख चर्च पिता थे जिनका अलेक्जेंड्रिया और मिस्र में महत्वपूर्ण प्रभाव था, ओरिजन और अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट।

दूसरी और तीसरी सदी के अंत में, चौथी सदी की शुरुआत में, ये वे लोग थे जिन्होंने धार्मिक तर्क को प्रभावित किया, धर्मग्रंथों की व्याख्या को प्रभावित किया, और ईसाई धर्म को महत्वपूर्ण तरीकों से प्रभावित किया। क्लेमेंट को गंभीरता से लेने से पहले धर्मग्रंथों की व्याख्या करने के उनके तरीकों में से एक पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। क्लेमेंट धर्मग्रंथों की अलंकारिक व्याख्या के लिए जाने जाते थे।

वह और उनके सहयोगी ओरिजन वास्तव में शास्त्र की एक रूपक व्याख्या के साथ शाब्दिक रूप से पहचाने जा सकते हैं। यदि आप पढ़ते हैं कि वे कुछ दृष्टान्तों के बारे में क्या कहते हैं, तो आप वास्तव में हंसते-हंसते लोटपोट हो सकते हैं, या आप अपना सिर खुजला सकते हैं जब तक कि आपके सिर पर बाल न रह जाएँ। क्योंकि वे जो खोज और देख पाते हैं वह उल्लेखनीय है।

लेकिन उनके विचार में, जब तक वे लोगों को उनके ईसाई जीवन में प्रोत्साहित करने के लिए पाठ का उपयोग कर रहे हैं, वे आकर्षक विचार हैं और लोगों को उन्हें अपनाना चाहिए। दिलचस्प बात यह है कि भले ही वे उस दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं, उनके निष्कर्ष अभी भी ईसाई सोच को आकार देते हैं, और अक्सर, हम उनकी व्याख्या के दृष्टिकोण पर पुनर्विचार किए बिना ही उन्हें उद्धृत करते हैं। क्लेमेंट एक रूपकवादी व्यक्ति था, और मैं सुझाव दूंगा कि हम उसके इस सुझाव को यहाँ बहुत गंभीरता से न लें कि लिडिया पॉल की पत्नी थी, और वह साथी जो यूओडिया और सिन्दुके की मदद करने वाला था, वास्तव में पॉल की पत्नी, लिडिया है।

यह थोड़ा ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है। जॉन क्रिसोस्टॉम, एंटीओचियन फादर में से एक, जो वास्तव में बाइबल को पढ़ना और उसे स्पष्ट रूप से, शाब्दिक रूप से, संदर्भ में व्याख्या करना चाहते थे, अपने समय के सबसे अच्छे प्रचारकों और बाइबल व्याख्याकारों में से एक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि जुए का साथी इन महिलाओं में से किसी एक का पति या भाई होना चाहिए।

क्रिसोस्टॉम के लिए, यह एक सुझाव है, जिस पर हमें विचार करना चाहिए। खैर, चलिए इसे ऐसे ही छोड़ देते हैं। यह एक सुझाव है।

क्योंकि क्रिसोस्टॉम को नहीं पता। मैं आपको यह सब इसलिए बता रहा हूँ ताकि अगर आप कोई टिप्पणी करें जो कहती है कि यह निश्चित रूप से पॉल की पत्नी है, तो आप जान लें कि यह कहाँ से आ रहा है। यह महिलाओं में से एक का पति है।

आप जानते हैं कि यह कहाँ से आ रहा है। क्या मैं आपको यह भी सुझाव दे सकता हूँ कि यदि, वास्तव में, क्रिसोस्टॉम के सुझाव को लिया जाता है, तो यहाँ संघर्ष समाधान में संभावित पूर्वाग्रह है, है न? यदि वह व्यक्ति उनमें से एक है, उनमें से किसी एक का पति या भाई है, तो क्या दूसरा व्यक्ति इस बात पर भरोसा करेगा कि वे मुद्दों से निपटने के तरीके में निष्पक्षता बरतेंगे? यह सोचने वाली बात है। मैं आपको जो ग्रीक शब्द देता हूँ, सुजुगोस, जिसका अनुवाद योक-फेलो है, को समझा गया है और आधुनिक विद्वत्ता में, इसे व्यापक रूप से एक उचित नाम के रूप में माना जाता है।

तो इसका मतलब है कि यह किसी का नाम होना चाहिए। और अगर यह किसी का नाम है, तो यह जुए का साथी है। यह जुए का साथी नहीं है, बल्कि यह किसी का नाम है।

एकमात्र समस्या जो इस मुद्दे को लंबित रखती है, वह यह है कि हमारे पास किसी भी पाठ, चर्मपत्र या अंश का कोई सबूत नहीं है जो कहीं भी उस नाम को दर्शाता हो। इसलिए यहाँ योक फ़ेलो मुद्दा बन जाता है। लेकिन यहाँ पॉल का कहना यह नहीं है कि हम घंटों, मिनटों और पन्नों को यह पता लगाने में खर्च करते हैं कि योक-फ़ेलो कौन है।

पॉल का कहना है कि इन महिलाओं को सही मानसिकता विकसित करने के लिए खुद के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने की ज़रूरत है, और उन्हें मदद की ज़रूरत है। और वह उनकी मदद करने के लिए एक भरोसेमंद व्यक्ति को बुलाता है। यही यहाँ मुख्य बिंदु है।

इसी ढांचे के साथ, पौलुस ने दृढ़ रहने के लिए कहने के ठीक बाद, यह निर्देश जारी किया है। आनन्दित रहो। प्रभु में हमेशा आनन्दित रहो।

मैं फिर कहता हूँ, आनन्द मनाओ। अपनी समझदारी सबको दिखाओ। प्रभु निकट हैं।

किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। वाह!

तो, इस महिला को शांति लाने और इस तरह की अन्य सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए चुनौती देने के बाद, यह सिर्फ इसलिए है कि अगर कुछ हद तक चिंता या समस्याएँ पैदा हो रही हैं, तो मैं चाहता हूँ कि आप कुछ मुख्य बातों पर ध्यान दें। वह कॉल करता है, और वह वास्तव में कहता है कि आनन्द मनाओ। जरा कल्पना करें।

ओह, क्या उन महिलाओं ने समस्याओं का समाधान कर लिया है? वैसे, अरे दोस्तों, शांत हो जाओ। प्रभु में आनन्द मनाओ।

आप जानते हैं, जब भी कोई ऐसी स्थिति आती है जिसमें भ्रम और ऐसी ही कोई बात नज़र आती है, तो घबराएँ नहीं और ऐसा न करें कि दुनिया टूट रही है। आनन्द मनाएँ, लेकिन सिर्फ आनन्द ही न मनाएँ। प्रभु में आनन्द मनाएँ। प्रभु यीशु मसीह की प्रभुता में अपना स्थान पाकर आनन्द मनाएँ।

और अगर आपको यह बात समझ में नहीं आई, तो मैं फिर से कहता हूँ कि आनन्द मनाइए। वाह। इस अंश के बारे में सोचते हुए मैं आपको कुछ बातें बताना चाहता हूँ।

मुझे लगता है कि हम बहुत उत्साहित हो जाएँ और इस पर जितना समय देना चाहिए, उससे ज़्यादा खर्च करें। पौलुस इस सामान्य चेतावनी को फिर से दोहराते हुए कहता है कि प्रभु में परमेश्वर के लोगों के बीच निरंतर आनंद पाया जाना चाहिए। फिर से, प्रभु में।

जैसा कि आप हमारे साथ जेल पत्रों पर इस बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला को पढ़ते हैं, कृपया इन सभी पुस्तकों के साथ अपना समय लें। मसीह में, प्रभु में, मसीह यीशु में उन शब्दों को खोजें, और समझें कि पॉल के लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। प्रभु में, आनन्दित हों, और अपनी नम्रता को बनाए रखें। ओह, हाँ, वे महिलाएँ शायद उतनी कोमल न हों।

उन्हें लड़ना पसंद है। वैसे, यहाँ सज्जनता का मतलब न्यूयॉर्क शहर के फिफ्थ एवेन्यू में जाकर सबसे महंगी ड्रेस खरीदना और उसे पहनना, सबसे शानदार घड़ी और हार खरीदना और सिर्फ दिखावा करने से नहीं है। खैर, यहाँ इसका कपड़ों से कोई लेना-देना नहीं है।

इस अर्थ में, नम्रता का संबंध दृष्टिकोण और आचरण से है। अपनी नम्रता, अपने सामाजिक दृष्टिकोण को उन लोगों को प्रतिबिंबित करने दें जो मसीह के प्रभुत्व के तहत अपना जीवन जीते हैं। और वैसे, यह निजी नहीं है।

अपनी नम्रता को सभी को बताएं। लोगों को यह देखने दें कि आप किस तरह से अपना जीवन जीते हैं और वे आपके अंदर की नम्रता को महसूस करना शुरू कर दें, जो आपके नम्र व्यवहार और अन्य लोगों के साथ नम्र व्यवहार में झलकती है। पॉल एक प्रोत्साहन या प्रेरणा प्रदान करता है।

आपको अपनी सज्जनता सभी को बतानी चाहिए क्योंकि प्रभु निकट है। इसका एक युगांतिक अर्थ हो सकता है जो कहता है कि प्रभु का आगमन निकट है, या आप उस स्थान पर हैं जहाँ प्रभु की उपस्थिति वास्तविक है। इसे अपने जीवन का तरीका बनाइए क्योंकि प्रभु निकट है।

चाहे यह युगांतिक हो या इसमें प्रभु की उपस्थिति का यह तात्कालिक विशेष अर्थ हो, प्रभु देख रहे हैं कि आप कैसे व्यवहार कर रहे हैं। पॉल का कहना है कि, हे परमेश्वर के लोगों, अपनी नम्रता को प्रकट होने दें। शायद आप इस बारे में गंभीरता से सोचना शुरू कर रहे हैं कि पॉल ईसाई धर्म को एक निजी मामला मानने से कितना इनकार करता है।

नहीं, पॉल के लिए, जिस तरह से हम इस टेढ़े-मेढ़े संसार में अपना जीवन जीते हैं, उससे यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि जो लोग प्रभु को जानते हैं, वे उच्च नैतिक स्थिति रखते हैं। उनका रवैया, उनका आचरण और एक-दूसरे के साथ उनका व्यवहार वांछनीय होना चाहिए। इसीलिए, इस पत्र में पहले उन्होंने उल्लेख किया था कि उन्हें संसार में ज्योति की तरह चमकना चाहिए।

और फिर पौलुस चिंता के बारे में बात करेगा। ओह, चिंता आज एक बड़ा मुद्दा है। लेकिन पौलुस कहेगा, अब जब तुम अपनी सज्जनता को सभी लोगों पर प्रकट करते हो, तो प्रभु की उपस्थिति के द्वारा अपनी चिंता पर विजय पाओ।

आध्यात्मिक अनुशासन। मैं इसे एक मिनट में श्लोक 4 से 7 तक पढ़ने की कोशिश करूँगा। प्रभु में हमेशा आनन्दित रहो। फिर से, मैं कहता हूँ आनन्दित रहो।

अपनी कोमलता को सब पर प्रगट करो। प्रभु निकट है—वचन 6. किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।

और परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। वाह। चिंता।

किसी बात को लेकर चिंतित न हों। जब आप पाते हैं कि आप परमेश्वर के सामने किसी बात को लेकर खड़े हैं, तो चिंतित रहें। इसका मतलब यह नहीं है कि एक ईसाई के रूप में, ऐसा कभी नहीं होगा जब आपको लगे कि चीजें आपके नियंत्रण में नहीं हैं।

हां, आप ऐसा महसूस करेंगे। चिंता महसूस करने की संभावना होगी। लेकिन पॉल कहते हैं, किसी भी बात को लेकर चिंता मत करो।

अपने आप को चिंता में फँसने न दें। मैरी के अनुसार, चिंता शब्द का मतलब चिंता भी होता है। हमेशा के लिए योद्धा न बनें और हर चीज़ के बारे में चिंता करने की स्थिति में खुद को फँसाएँ नहीं, और ऐसा लगता है कि सब कुछ कुचलने वाला है; यह नष्ट करने वाला है।

आपके आस-पास की हर चीज़ हिलती हुई सी लगती है और आपको इस डर और चिंता में फँसा देती है कि क्या होगा। किसी बात को लेकर चिंतित न हों। इस शब्द पर ध्यान दें, किसी बात को लेकर चिंतित न हों, शून्य।

लेकिन हर चीज़ में, हर चीज़ में, आपको यही करना चाहिए। अपना अनुरोध परमेश्वर को बताएँ। एक सांत्वना पाएँ, परमेश्वर के साथ एक जगह पाएँ और परमेश्वर से बात करें।

सभी चीज़ों में, खुद को ईश्वर की उपस्थिति में रखें। और जब आपको लगे कि चीज़ें आपके नियंत्रण से बाहर हैं, तो प्रार्थना में ईश्वर से संपर्क करें। उसे बताएं कि आप नियंत्रण से बाहर महसूस करते हैं।

अपनी प्रार्थनाएँ परमेश्वर को अर्पित करें। अपना निवेदन, अपनी विनती परमेश्वर के सामने रखें। और पौलुस ने कहा, धन्यवाद के साथ नहीं, बल्कि धन्यवाद के साथ, कृतज्ञता के हृदय से, न कि कृतघ्नता या अधिकार के हृदय से।

कभी-कभी मुझे खुद को प्रार्थना में परमेश्वर के सामने आते हुए और परमेश्वर को यह बताने में इतनी जल्दी में पाया जाता है कि मेरी क्या ज़रूरतें हैं, मानो मैं कुछ चीज़ों का हकदार हूँ जो परमेश्वर को मेरे लिए करनी चाहिए। पॉल कहते हैं, रुकें, रुकें, रुकें। अपने अनुरोध, अपनी प्रार्थनाओं और अपनी विनतियों को अपने दिल में धन्यवाद और कृतज्ञता की भावना के साथ परमेश्वर को बताएं।

यह महसूस करना कि अगर ईश्वर आपके पक्ष में नहीं होता, तो शायद चीज़ें और भी बदतर हो सकती थीं। और इस दृष्टिकोण को अपने अनुरोध को प्रस्तुत करने के तरीके में शामिल करें। मैंने अक्सर लोगों को यह कहते सुना है कि मैं ईश्वर से नाराज़ हूँ क्योंकि मैं चाहता था कि वह XYZ करे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।

लेकिन हम इंसान होने के नाते, अक्सर ऐसा महसूस कर सकते हैं। लेकिन यहाँ पौलुस के निर्देश में, वह हमें जो संदेश देना चाह रहा था, वह यह है कि हमें उस रवैये के बारे में सावधान रहना चाहिए। अगर हम परमेश्वर के पास धन्यवाद के भाव के साथ आए और उसके सामने अपना अनुरोध रखा, तो क्या हम वास्तव में खुद को ऐसी स्थिति में पा सकते हैं जहाँ हम परमेश्वर को बताने के लिए कुछ हद तक हिम्मत या कमी जुटा पाएँ? क्या आप जानते हैं? आप कितने बड़े हो सकते हैं? मैं आप पर क्रोधित हूँ, और मैं आपसे झगड़ा कर सकता हूँ।

और अंदाज़ा लगाइए कि कौन हारने वाला है? लेकिन कृतज्ञता के हृदय में, हम विनम्रता के साथ आ सकते हैं। कल्पना कीजिए कि आप किसी के पास जा रहे हैं, मदद मांग रहे हैं, जबकि आपके विचारों में, आपके हृदय में, आप वास्तव में उस व्यक्ति के प्रति गहरी कृतज्ञता की भावना से अभिभूत हैं या अभिभूत हैं जो आपके लिए किया है या किया है। उस व्यक्ति से आपका अगला अनुरोध किस तरह से रखा जाएगा? पॉल कहते हैं, किसी भी बात की चिंता मत करो, लेकिन हर चीज़ या सभी चीज़ों में, कृतज्ञता की भावना के साथ प्रार्थना और विनती में परमेश्वर के पास जाओ।

और अगर आप ऐसा करते हैं, तो इसका परिणाम यह होगा। इसका परिणाम यह होगा कि ईश्वर की शांति, आइरीन, शालोम और वह संपूर्ण कल्याण जो केवल ईश्वर ही प्रदान कर सकता है, आपको मिलेगा। और ईश्वर की यह शांति इतनी महान है कि यह मानवीय समझ से परे है।

यह एक ऐसी शांति है जो असंभव लगने वाली परिस्थितियों के बीच भी मौजूद हो सकती है। यह एक ऐसी शांति है जो ईश्वर ऐसे संदर्भ में दे सकता है जहाँ व्यक्ति को वास्तव में, स्वाभाविक रूप से, इतना असहाय और निराश महसूस करना चाहिए। यह शांति की वह भावना है जो मृत्युशय्या पर पड़े व्यक्ति को मृत्युशय्या पर मिलने वालों को प्रोत्साहित करने वाला सबसे मजबूत व्यक्ति बना सकती है।

ईश्वर की शांति जो उससे कहीं बढ़कर है, मानव मन को झकझोर देती है। मैं इसे अमेरिकी अनुवाद में कहने की कोशिश करता हूँ। ईश्वर की शांति जो मन को झकझोर देती है।

परमेश्वर की शांति ही परिणाम हो। और वास्तव में, यह एक वादा है। यही परिणाम होगा।

यदि आप अपनी प्रार्थना और विनती में परमेश्वर के पास धन्यवाद के साथ आए हैं, तो परमेश्वर की शांति जो सभी समझ से परे है। अगले शब्द को देखें। अच्छा, परमेश्वर।

वहाँ अभिव्यक्ति में किसी तरह की जेल सैन्य जैसी बात है। भगवान का आशीर्वाद पोस्ट। बस कल्पना करें कि भगवान की शांति आपके दिल और दिमाग के चारों ओर यह दीवार बना रही है और कहें, चिंता, बेचैनी, परेशानी।

आप इस व्यक्ति के दिल और दिमाग को भेद नहीं सकते। बस कल्पना करें कि ईश्वर की शांति आपके दिल को ढँक रही है, आपको ढँक रही है, आपको निगल रही है।

यहाँ तक कि सबसे कठिन समय के बीच में भी। जैसा कि मैंने इस व्याख्यान में पहले कहा था, यह मुझे भजन 23, श्लोक 4 की याद दिलाता है। भले ही मैं मृत्यु की छाया की घाटी से गुज़रूँ। मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा।

क्योंकि तुम मेरे साथ हो, मेरे लिए, यही वह है जो परमेश्वर की शांति कर सकती है क्योंकि वह शांति तुम्हारे हृदय और मन की रक्षा करेगी।

मसीह यीशु में। आपका हृदय। प्राचीन यूनानी भाषा में, समझ आपकी भावना का केंद्र है।

जीवन का केंद्र। आपका मन तर्क का केंद्र है। आपके नैतिक विकल्पों का केंद्र।

वह इसकी रक्षा करेगा; वह इसे संक्रमित या दूषित होने से बचाएगा। उन सभी दबावों से जो चिंता के संभावित कारण हैं। वाह।

हमने कितनी बार ऐसा सोचा है? इस सैन्य छवि के कारण, जब मैं अपने दिल और दिमाग के बारे में सोचता हूँ। सावधान रहना। ताकि कठिनाइयाँ, भयावहताएँ, भय और असुरक्षाएँ मुझे निगल न सकें।

जब भी मेरे मन में थोड़ी सी भी चिंता की भावना उत्पन्न होती है, तो मैं परमेश्वर के पास आने के लिए प्रेरणा पा सकता हूँ। फिलिप्पी की कलीसिया में पौलुस कहता है कि जब आप इस एकता को बनाए रखते हैं और अपनी मांगों को नम्रता के साथ सभी को बताते हैं, तो किसी भी बात की चिंता न करें।

लेकिन हर बात में ईश्वर के पास कृतज्ञता के साथ आइए, और यही परिणाम होगा। ईश्वर की शांति आपके दिल और दिमाग की रक्षा करेगी। एक लेखक ने इसे इस तरह से लिखा है।

किसी भी बात को लेकर चिंतित न होने का तरीका है हर चीज़ के लिए प्रार्थना करना। वाह। इससे पहले कि आप हमारे साथ यह व्याख्यान श्रृंखला शुरू करें, क्या मैं पूछ सकता हूँ?

क्या आपने इन दिनों में पॉल और उसके प्रार्थना जीवन के बारे में सोचा है? शायद हम इसे यहाँ व्यक्तिगत बना दें। क्या आपने वास्तव में ईसाई धर्म के बारे में इतने व्यक्तिगत तरीके से सोचा है?

जहाँ प्रार्थना, कृतज्ञता, चरित्र, शांति से रहना और भाइयों और बहनों के साथ एकता में रहना आपके जीवन का इतना हिस्सा है कि जब आपको लगता है कि आप अप्रत्याशित रूप से डर और चिंता की भावना से घिर गए हैं, तो आप भगवान के पास आ सकते हैं और वह शांति पा सकते हैं। हाँ, आइरीन सही हो सकती है।

किसी भी बात के लिए चिंतित न होने का तरीका है हर बात के लिए प्रार्थना करना। और पौलुस आगे लिखता है। अंत में, भाइयों, जो कुछ भी सत्य है, जो कुछ भी आदरणीय है, जो कुछ भी उचित है, जो कुछ भी पवित्र है, जो कुछ भी मनभावन है, जो कुछ भी सराहनीय है, अगर कोई श्रेष्ठता है, अगर कोई प्रशंसा के योग्य बात है, तो हमारे बारे में सोचो।

इन बातों को अपने मन में समा जाने दो। इन सम्माननीय, प्रशंसनीय गुणों के बारे में सोचो। इन्हें अपने मन में समा जाने दो।

जो कुछ तुमने मुझसे सीखा, ग्रहण किया, सुना, और मुझ में देखा है, उसे अपने अंदर समाहित करो। इन बातों का पालन करो, तब शांति का परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा। मैं परीक्षा में हूँ।

मैं इन चीज़ों के बारे में बात करने में बहुत समय लगाना चाहता हूँ। लेकिन मैं यहाँ तीन या दो मिनट में कुछ करने की कोशिश करूँगा। जब आप उनकी कही गई बातों को देखते हैं, तो आपको उन चीज़ों के बारे में सोचना चाहिए जो वास्तव में उल्लेखनीय, सराहनीय, प्रशंसनीय और सम्मान और शर्म की संस्कृति में उत्कृष्टता की हैं।

ये सम्माननीय गुण हैं, सम्माननीय गुण हैं, ऐसी चीज़ें जिन्हें समाज देखेगा और कहेगा, हाँ, ये ऐसी चीज़ें हैं जो प्रशंसनीय हैं। पॉल कहते हैं, यहाँ-वहाँ विशिष्ट चीज़ों का नाम लिए बिना, इन चीज़ों और इन चीज़ों की खोज को अपने विचारों में समाहित होने दें: मानसिक गतिविधि, संज्ञानात्मक गतिविधि।

ईसाई धर्म सिर्फ़ इतना ही नहीं है। मैं चर्च गया, और हमने तालियाँ बजाई और नृत्य किया। मैं चर्च से बाहर आया, और मुझे अच्छा लगा। मैंने अपना शॉट ले लिया। मैं घर आ रहा हूँ, और अगले हफ़्ते तक यह खत्म हो जाएगा।

तो, मैं वापस जाऊँगा। मैं प्रशंसा करूँगा और नाचूँगा। मैं एक अच्छा उपदेश सुनूँगा।

मैं पूरी खुराक ले लूँगा और फिर वापस आऊँगा। एक और सप्ताह में यह खत्म हो जाएगी और मैं वापस जाकर दूसरा शॉट लगवा लूँगा। नहीं।

पौलुस कहता है कि फिलिप्पी के मसीहियों का सोचने का तरीका महत्वपूर्ण है। और उन्हें उन बातों पर ध्यान देना चाहिए जो आदरणीय हैं। ये वे बातें हैं जो परमेश्वर को महिमा देंगी।

फिर, देखिए कि पद 9 से सही बातों के बारे में सोचने की चुनौती देने के बाद वह और क्या बात करता है। सीखना, सोचना, ग्रहण करना। आपने क्या सीखा है। आपने क्या पाया है।

जो कुछ तुमने सुना है और जो कुछ तुमने पौलुस में देखा है, उसका पालन करो।

ओह, यह सिद्धांत के बारे में नहीं है। यह इस बारे में नहीं है कि मैं बाइबल से कितनी आयतें उद्धृत कर सकता हूँ। उनका अभ्यास करें।

वाह! मुझे यह पसंद आया। लेकिन जल्दी से इस पर ध्यान दें।

कम पाओ; मैं इससे बचने की कोशिश में बहुत ज़्यादा समय बर्बाद करता हूँ। पॉल नैतिक उत्कृष्टता के लिए आह्वान करते हुए साझा काल्पनिक रिश्तेदारी की अपील करता है। वह स्पष्ट है।

विचार खाली नहीं हो सकते। विचारों को सभी प्रकार की गंदगी से नहीं भरा जा सकता। वास्तव में, वह कहते हैं, जब आप प्रार्थना में परमेश्वर के पास आते हैं, तो आपका मन और आपका हृदय सुरक्षित रहेगा।

और उस मन को इन बातों के बारे में सोचने दो। तुम इसके बारे में क्या सोचते हो? और तुम्हारे मन में क्या सम्माननीय है?

जो कुछ आपने सुना है, जो आपको मिला है, जो आपने सीखा है, और जो आपने पौलुस में देखा है, उसे जोड़ें और उसे अमल में लाएँ - यह एक और वादा है। आयत 9ब एक और वादा देता है।

जब आप ऐसा करेंगे, तो सोचिए क्या होगा? और शांति का परमेश्वर आपके साथ होगा। वाह। शांति का परमेश्वर आपके साथ होगा।

यह प्रार्थना के अंत जैसा है। शांति, शांति, शांति, शांति। और शांति का परमेश्वर आपके साथ रहेगा।

यह सब कहने के बाद, पौलुस पत्र को समाप्त करने के लिए तैयार है। वह धन्यवाद और अंतिम अभिवादन प्रस्तुत करेगा। पद 10 से 20 तक का यह धन्यवाद कुछ विद्वानों को विलंबित धन्यवाद लगता है।

उनके विचार के अनुसार, यदि आप पत्र लेखन में पॉल के पैटर्न का पालन करते हैं, तो इस तरह का धन्यवाद पहले आता है। चूँकि पॉल इसे समाप्त कर रहा है, इसलिए कुछ विद्वान कहते हैं कि यह विशेष पाठ यहाँ नहीं है। यह संभवतः एक अलग पत्र है जिसे बाद में लाया गया था।

फिलिप्पियों पर चर्चा की शुरुआत में मैंने आपको बताया था कि हमारे पास ऐसा कोई पत्र प्रसारित होने के बारे में कहने के लिए ज़्यादा सबूत या समर्थन नहीं है। इसलिए हम इसे एक पत्र के रूप में देखते हैं। आइए बस उस धन्यवाद के बारे में संक्षेप में देखें।

इस धन्यवाद को एक कृतघ्न धन्यवाद के रूप में लेबल किया गया है। एक छिपी हुई, एक छिपी हुई प्रशंसा। आप पूछ सकते हैं कि क्यों। क्योंकि यह एक धन्यवाद है, लेकिन यह वास्तव में एक धन्यवाद की तरह नहीं दिखता है।

क्योंकि पाठ में ऐसा ही लिखा है, मैं प्रभु में बहुत खुश हूँ कि अब, आखिरकार, आपने मेरे लिए अपनी सहमति को पुनर्जीवित कर दिया है। आप वास्तव में मेरे लिए चिंतित थे, लेकिन आपके पास कोई अवसर नहीं था।

लेकिन मैं ज़रूरतमंद होने की बात कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने सीखा है कि मैं जिस भी परिस्थिति में रहूँ, मुझे संतुष्ट रहना चाहिए। मैं जानता हूँ कि कैसे कमज़ोर होना है, और मैं जानता हूँ कि कैसे भरपूर होना है। किसी भी और हर परिस्थिति में, मैंने भरपूरी और भूख, बहुतायत और ज़रूरत का सामना करने का रहस्य सीखा है।

मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूँ जो मुझे सामर्थ्य देता है। क्या आप किसी को इस तरह धन्यवाद कहते हैं? चलिए आगे बढ़ते हैं। फिर भी, मेरी परेशानी को साझा करना आपका दयालु व्यवहार था।

और तुम फिलिपियों को भी पता है कि सुसमाचार के आरंभ में जब मैंने मकिदुनिया छोड़ा था, तो तुम्हारे अलावा किसी भी कलीसिया ने मेरे साथ देने और लेने में भागीदारी नहीं की थी। यहाँ तक कि थिस्सलुनीके में भी, तुमने मेरी ज़रूरतों के लिए एक बार और फिर से मेरी मदद की। मैं उपहार की तलाश नहीं करता, बल्कि मैं वह फल चाहता हूँ जो तुम्हारे श्रेय को बढ़ाए।

मुझे पूरा भुगतान और उससे भी ज़्यादा मिल गया है। मुझे अच्छी आपूर्ति की गई है। वाह! क्या आप इस तरह से धन्यवाद कहते हैं? इफ्रदीतुस से आपके द्वारा भेजी गई भेंट, एक सुगंधित भेंट, एक स्वीकार्य और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला बलिदान प्राप्त करने के बाद।

और मेरा परमेश्वर मसीह यीशु में अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हारी हर ज़रूरत को पूरा करेगा। हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा सदा सर्वदा होती रहे। तो, आप यहाँ हर तरह की सैंडविचिंग चीज़ को होते हुए देखते हैं।

यही कारण है कि विद्वान इस बात को लेकर निश्चित नहीं हैं कि पॉल के साथ क्या हो रहा है। इसलिए, इस पर ध्यान दें। टिप्पणीकारों के इस विशेष परीक्षण के बारे में अलग-अलग विचार हैं और कभी-कभी ऐसा लगता है कि पॉल धन्यवाद कह रहा है।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह कह रहा है कि मुझे वैसे भी आपकी मदद की ज़रूरत नहीं थी। इसलिए, कुछ टिप्पणीकारों ने कहा कि पॉल वास्तव में दिखाता है कि वह चर्च की देखभाल और चिंता के लिए आभारी है।

कुछ लोगों का कहना है कि शायद उसे उपहारों की उम्मीद नहीं थी। लेकिन चर्च ने उसके इस अनुरोध को नज़रअंदाज़ कर दिया कि वह अपने मंत्रालय में स्वतंत्र होना चाहता था, और उन्होंने उसे कुछ उपहार भेजे। इसलिए उसे उपहार तो मिले लेकिन वह इससे बहुत खुश नहीं था।

के अच्छे काम करने पर बहुत ज़्यादा धन्यवाद कहने की ज़रूरत नहीं होती। इसलिए, पॉल वास्तव में शांत रहने की कोशिश कर रहा है। मुझे नहीं पता कि इसे कैसे कहा जाए, लेकिन यह दृष्टिकोण काफी अस्थिर है। कुछ लोग कहते हैं कि पॉल का उद्देश्य सुसमाचार के प्रचार पर अपना ध्यान केंद्रित करना है।

कुछ लोग कहते हैं कि पॉल सराहना और जागरूकता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है और उसका मिशन न तो उनके उपहार पर निर्भर है और न ही उससे प्रेरित है। मैं इसी तरह की स्थिति की ओर झुकता हूँ। एक सहकर्मी, फ्रैंक, इसे इस तरह से कहते हैं।

यह सत्र मूल रूप से फिलिप्पियों के प्रति आभार व्यक्त करने का एक तरीका है, जो उन्होंने अपने संदेशवाहक इपफ्रदीतुस के माध्यम से फिलिप्पियों को भेजा था। आभार व्यक्त करने का यह नोट तीन स्थानों पर दिखाई देता है। पद 10 में जहाँ पौलुस फिलिप्पियों द्वारा उसके लिए सहमति व्यक्त करने के कारण अपनी बड़ी खुशी के बारे में बात करता है।

पद 14 में, वह उनसे कहता है कि उनके कष्ट में उनकी सहायता करना उनके लिए अच्छा था। पद 18 में जहाँ वह उनके उपहार के अपार मूल्य का वर्णन करने के लिए वित्तीय और पंथ संबंधी रूपकों का उपयोग करता है। पौलुस वास्तव में यही कह रहा है।

वह उनकी देखभाल और चिंता के लिए प्रभु में आनन्दित है। वह उनके उपहार और भागीदारी के लिए आभारी है। उनके उपहार ने उसकी ज़रूरतों को पूरा किया है।

और उसने सीखा है कि बहुतायत और अभाव में कैसे जीना है। लेकिन वह यह भी स्पष्ट करना चाहता है कि, वास्तव में, वह मसीह के द्वारा सब कुछ कर सकता है। जो उसे मजबूत बनाता है।

पॉल के लिए, उसने अपनी परिस्थितियों की परवाह किए बिना संतुष्ट रहना सीखा है। जैसा कि आपको याद होगा, 1 तीमुथियुस 6:6, भक्ति और संतोष महान लाभ है। संतुष्ट पॉल कहते हैं कि वास्तव में जीवित रहने के लिए उन्हें उनके उपहार की आवश्यकता नहीं थी।

न ही उसने उपहार की मांग की। फिर भी वह प्रार्थना करता है कि भगवान उन्हें भरपूर मात्रा में दे। और मुझे वह प्रार्थना पसंद है।

और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा। हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

और उसका धन्यवाद इन शब्दों में उतना ही सरल और बहुत विनम्र है। मसीह यीशु में हर एक पवित्र व्यक्ति को नमस्कार। मेरे साथ जो भाई हैं वे तुम्हें नमस्कार करते हैं।

सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं, विशेष करके जो कैसर के घराने के हैं। प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे।

इस व्याख्यान को समाप्त करते हुए, मैं आपके दिमाग में यह छवि ताज़ा करना चाहता हूँ, जो मैं सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि यह आपके साथ बनी रहे। इस पत्र में कुछ मुख्य विषय उभर कर आए हैं। दोस्ती और साझेदारी का विषय।

दुख का सामना करते हुए भी खुशी और आनन्द मनाना। मसीह के साथ चलने में नम्रता और आज्ञाकारिता। समुदाय में एकता।

ईश्वर के घराने के परिवार में भाई-बहन होने का मतलब है रिश्तेदारी। और ईसाई आदर्श। तीमुथियुस, इपफ्रदीतुस, पौलुस और सबसे बढ़कर, मसीह।

अंत में, फिलिप्पियों को लिखे पौलुस के पत्र ने दिखाया है कि कारावास और बाधाएँ सुसमाचार की प्रगति को रोक नहीं पाई हैं। सुसमाचार आगे बढ़ रहा है।

चर्च को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और एकता में रहना चाहिए। जैसे-जैसे वे एकता में रहते हैं, उन्हें ऐसी मानसिकता विकसित करनी चाहिए जो मसीह के नाम का आह्वान करने वालों के लिए उपयुक्त हो। और जब वे इस मानसिकता को विकसित करते हैं, तो इस तथ्य पर ध्यान देना बहुत महत्वपूर्ण है कि ऐसे मॉडल हैं जिनका वे अनुसरण कर सकते हैं।

मसीह पहला आदर्श है जिसे स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। तीमुथियुस, इपफ्रदीतुस, स्वयं पौलुस। जब वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें वास्तव में यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे एकता की मजबूत भावना विकसित करें।

और उन दो खास लोगों के लिए, यहूदिया और सुन्तुखे, जो चर्च में अच्छे संबंध नहीं रखते। उन्हें एक साथ मिलकर काम करने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेनी चाहिए। और एक सहकर्मी को उनकी मदद करनी चाहिए।

बाकी चर्च के लिए, उनकी सज्जनता सभी को पता होनी चाहिए। और अगर अभी भी कुछ हद तक चिंता है, तो चर्च को प्रार्थना में भगवान के पास आना चाहिए।

उनके दिलों में कृतज्ञता की भावना होगी। और उनके जीवन में ईश्वर की शांति वास्तविक होगी। मैं यह कहकर समाप्त करना चाहता हूँ कि ईश्वर की शांति, जो सभी समझ से परे है, आपको भी मिले।

फिलिप्पियों और जेल पत्रों के लिए हमारे द्वारा किए गए अध्ययनों के इस संग्रह का अध्ययन करने के लिए आपका धन्यवाद। हमारे साथ अध्ययन करने के लिए आपका धन्यवाद। मुझे उम्मीद है कि आप भी मेरी तरह बढ़ रहे हैं और सीख रहे हैं।

धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा जेल पत्रों पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 16 है, एकता के लिए आह्वान, फिलिप्पियों 4।